मणिपुरी नृत्य (पारिभाषित शब्द)

लास्य—नृत्य का वह रूप जिसमें ललित अंगहार ललित लय, कौशिकी वृत्ति तथा गति का प्रयोग होता है, लास्य कहलाता है। ताल, वाद्य, नृत्य तथा अभिनय के क्रम में किया जानेवाला कोमल प्रयोग लास्य कहलाता है। लास्य कोमलता और शृंगारिकता का प्रतीक है। इसमें ऐसे अंगहारों का प्रयोग किया जाता है जो स्त्रियों के लिए अधिक उपयुक्त होता है। लास्य से रस और भाव की उत्पत्ति होती है। लास्य शृंगार रस से परिपूर्ण लज्जा एवं विनम्रता का परिचायक होता है। इस नृत्य में पदगति या पदसंचालन अत्यंत कोमल रूप से होता है।

हस्त—हाथों के संकेत से जो मुद्रा बनती है या उसके द्वारा भाव का प्रदर्शन किया जाता है उसे हस्त या हस्तक कहते है। नृत्य में भावों को प्रदर्शित करने के लिए कभी एक हाथ तथा कभी दोनों हाथों का प्रयोग किया जाता है। एक हाथ से जो मुद्राएँ बनती हैं उसे एक हस्तमुद्रा तथा दोनों हाथों से जो मुद्राएँ बनती हैं उसे संयुक्त हस्त मुद्रा कहते हैं। अभिनय दर्पण के अनुसार असंयुक्त या एक हस्त मुद्रा 28 प्रकार के हैं तथा संयुक्त हस्त मुद्रा 23 प्रकार के होते हैं, किन्तु मणिपुरी नृत्य में केवल गोविन्द संगति लीला केवल 8 प्रकार के ही असंयुक्त मुद्रा तथा 4 प्रकार के संयुक्त हस्तमुद्रा को प्रयोग में लाया जाता असंयुक्त हस्त है। उनके नाम इस प्रकार है—(1) पताक हस्त, (2) त्रिपताक हस्त, (3) अर्ध पताक हस्त, (4) कपित्थ हस्त, (5) मुष्ठीहस्त, (6) अर्धचन्द्र हस्त, (7) मृगशिर हस्त, (8) हस्यास्य हस्त।

संयुक्त हस्तमुद्रा—(1) अंजलि हस्त, (2) कर्कटम् हस्त, (3) चक्रहस्त, (4) सम्पुट हस्त।

मन की भावना को मुख और हस्त द्वारा दर्शकों के समक्ष अभिव्यक्त करना ही अभिनय कहलाता है —

अभिनय चार प्रकार के हैं—

(1) आंगिक (2) वाचिक (3) आहार्य (4) सात्विक

आंगिक—अंग, प्रत्यंग तथा उपांग द्वारा जिस अभिनय की अभिव्यक्ति होती है या की जाती है उसे आंगिक कहते हैं, जैसे—अंग, सिर, कर, वक्ष, पाश्व, कटिप्रदेश, पद तथा ग्रीवा ।

वाचिक—जो अभिनय वचन द्वारा किया जाता है । जैसे काव्य, नाटक, कथा आदि को वचन द्वारा प्रकाशित करने को वाचिक अभिनय कहते हैं ।

आहार्य—वस्त्र, अलंकार, और साज–सज्जा को आहार्य कहते है । विभिन्न रंगों के वस्त्र, परिधान एवं सुदंर गहनों के द्वारा विभूषित होकर जब कोई नर्त्तकी अभिनय करती है तो उसे आहार्य कहते हैं ।

सात्विक—अपने मन की भावना को भाव रस द्वारा अभिव्यक्त करने को सात्विक अभिनय कहा जाता है । यह मनोवृत्ति द्वारा स्वत: निर्गत होता है । सात्विक अभिनय के निम्नलिखित 8 गुण हैं—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, वैपश्य, वैवर्ण, अश्रु एवं प्रलय ।

भाव

भाव शब्द का बहुत ही वृहद अर्थ है परन्तु यहाँ पर हम शास्त्रीय नृत्य के अन्तर्गत भाव के विषय में चर्चा करेंगे। जिस प्रकार हिन्दी और अंग्रेजी या भाषा में व्याकरण में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होता ठीक उसी प्रकार भाव हो या अभिनय ये सभी शास्त्रीय नृत्य में लगभग सामान्य ही होते हैं–

मनुष्य के हृदयगत चिंता या विचारों को जब हम चेहरे तथा अंगों के द्वारा प्रदर्शित करते हैं तो उसे भाव कहते हैं–ये 5 (पाँच) प्रकार के होते हैं–

(1) स्थायी भाव (2) विभाव
(3) अनुभाव (4) संचारी भाव
(5) व्याभिचारी

(1) **स्थायी भाव**–के कारण जिस आनंद की प्राप्ति होती है उसे स्वाद या रस कहा जाता है– यह 9 प्रकार के होते हैं –

(1) रति (2) हास (3) शोक (4) क्रोध (5) भय (6) विभत्स (7) विस्मय (8) उत्साह (9) शांत

विभाव–विभाव नृत्य नाट्य और काव्य की रचना में सहायता करते हैं । ये भी रस सृष्टि के कारण है । इसके दो भाग हैं –

(1) आलम्बन (2) उद्दीपन ।

(3) **अनुभाव**–स्थायी भाव या संचारी भाव को प्रत्यंग द्वारा व्यक्त करना ही अनुभाव कहलाता है ।
जैसे–हाथ ऊपर उठाना, तिरछी नजर से देखना ।

(4) **संचारी भाव**–स्थायी भाव के साथ अन्य मनोविकार जैसे छोटे–छोटे भाव जो उत्पन्न होते हैं एवं पुनः विलीन हो जाते हैं संचारी भाव कहलाते हैं। यदि हम स्थाई भाव की तुलना समुद्र से करेंगे तो संचारी भाव की तुलना समुद्र के लहर से की जा सकती है ।

(5) व्याभिचारी–स्थाई भाव प्रकार के छोटे–छोटे भाव जो सामान्य नहीं होते तो फिर अपवाद ही होते हैं व्याभिचारी कहलाते हैं। इस प्रकार हमने भाव की परिभाषा पढ़ी ।

हस्त मुद्रा

अभिनय दर्पण के अनुसार हस्त मुद्रा तीन प्रकार के होते हैं–

(1) असंयुक्त हस्त मुद्रा –28 प्रकार

(2) संयुक्त हस्त मुद्रा –23 प्रकार

(3) नृत्य हस्त मुद्रा –13 प्रकार

प्रतिदिन के जीवन में हम जितना भी कार्य करते हैं उसमें हाथ का प्रयोग तो अवश्य ही होता है परन्तु वह सभी एक मुद्रा होती है जिसका नाम भी है यह जान कर आपको आश्चर्य होगा। किन्तु शास्त्रीय नृत्य में हम एक हाथ से या दोनों हाथों से जो भी कार्य करते हैं उसका एक नाम हैं जिसे सचित्र दिया जा रहा है–

असंयुक्त हस्तमुद्रा के 28 प्रकार के होते हैं–

(1) पताका	(2) त्रिपताका	(3) अर्धपताका
(4) कर्त्तरीमुख	(5) मयूर	(6) अर्धचन्द्र
(7) अराल	(8) शुकतुण्ड	(9) मुष्टी
(10) शिखर	(11) कपित्थ	(12) कटकामुख
(13) सूची	(14) चन्द्रकला	(15) पद्मकोश
(16) सर्पशीर्ष	(17) मृगशीर्ष	(18) सिंहमुख
(19) कांगुल	(20) अलपद्म	(21) चतुर
(22) भ्रमर	(23) हस्सास्य	(24) हंसपक्ष
(25) संदश	(26) मुकुल	(27) ताम्रचूड़
(28) त्रिशूल		

प्रश्न

1. मुद्रा के प्रकारों का सविस्तार वर्णन करें।

2. मणिपुरी नृत्य में कितने प्रकार के 'हस्त' मुद्राओं का प्रयोग होता है।

3. 'लास्य' शब्द की व्याख्या करें।

3

तालों का परिचय

तबला

तीनताल–यह मुख्यत: तबले का ताल है । इसमें 16 मात्राएँ होती है । चार-चार मात्राओं के 4 विभाग होते हैं । 1, 5, 13, पर ताली तथा 9 पर खाली होता है । कथक नृत्य एवं किसी भी संगीत क्षेत्र में यह तालों का राजा माना जाता है ।

ठेका–

धा ×	धिं	धिं	धा ।	
धा 2	धिं	धिं	धा ।	
धा 0	तिं	तिं	ता ।	
ता 3	धिं	धिं	धा ।	धा ×

झपताल–यह 10 मात्राओं के योग से निर्मित ताल है । इसमें 4 विभाग होते हैं । 3 ताली तथा । खाली होती है । 1, 3, 8 पर ताली तथा 6 खाली होती है । 2-3, 2-3 मात्राओं के चलन के अनुसार विभाग होते हैं । कथक नृत्य के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण ताल है । इसका ठेका इस प्रकार है–

धी ×	ना |	धी 2	धी	ना ।

ती	ना |	धी	धी	ना ।	धी
0		3			×

एकताल–यह मुख्यत: तबले का ताल है । यह ताल 12 मात्राओं के योग से बना है । इस ताल में दो-दो मात्राओं के 6 विभाग है तथा 4 ताली और 2 खाली होता है । 1, 5, 9, 11 पर ताली तथा 3, 7 पर खाली दिखाई जाती है । गायन शैली के लिए भी यह बहुत महत्त्वपूर्ण ताल है । गायन शैली के बड़ा खयाल या बिलंबित इस ताल में अधिकतर गाए जाते हैं । इसका ठेका इस प्रकार है ।

ठेका–

धिं	धिं |	धागे	तिरकिट |	तू	ना ।	
×		0		2		
क	ता |	धागे	तिरकिट |	धी	ना |	धिं
0		3		4		×

तालों को ठाह दुगुन एवं चौगुन की लयकारियों में लिखने का ज्ञान

तीन ताल ठाह–

धा	धिं	धिं	धा |	धा	धिं	धिं	धा |	
×				2				
धा	तिं	तिं	ता |	ता	धिं	धिं	धा ।	धा
0				3				×

दुगुन :

× धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा ।	
2 धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा ।	
0 धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा ।	
3 धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा ।	× धा

चौगुन –

धाधिधिं धा	धाधिधिंधा	धातिंतिंता	ताधिधिं धा।
×			
धाधिधिं धा	धाधिधिं धा	धातिंतिंता	ताधिधिं धा।
2			
धाधिधिं धा	धाधिधिं धा	धातिंतिंता	ताधिधिं धा।
0			
धाधिधिं धा	धाधिधिं धा	धातिंतिंता	ताधिधिं धा।
3			
धा			
×			

झपताल–

धी	ना	|	धी	धी	ना	|		
×			2					
ती	ना	|	धी	धी	ना	|	धी	
0			3				×	

दुगुन–

धी ना	धीधी	|नाती	नाधी	धीना|	
0		2			
धी ना	धीधी	|नाती	नाधी	धीना|	धी
0		3			×

चौगुन–

धीनाधीधी	नातीनाधी|	धीनाधीना
×		2
धीधीनाती	नाधीधीना|	धीनाधीधी
		0
नातीनाधी|	धीनाधीधी	धीधीनाती
	3	
नाधीधीना|	धी	
	×	

एकताल–ठाह :

धिं	धिं।	धागे	तिरकिट।	तू	ना।	
×		0		2		
क	ता।	धागे	तिरकिट।	धीं	ना।	धिं
0		3		4		×

दुगुन

धिंधिं	धागे तिरकिट।	तूना कता।		धागेतिरकिट	धीना।
×		0		2	
धिंधिं	धागे तिरकिट।	तूना कता।		धागेतिरकिट	धीना।
0		3		4	

धि
×

चौगुन :

धिंधिं धागे तिरकिट	तूना कता।	धागेतिरकिट धीना	
×		0	
धिंधिं धागे तिरकिट।	तूना कता	धागेतिरकिट धीना।	
	2		
धिंधिं धागे तिरकिट	तूना कता।	धागेतिरकिट धीना	
0		3	
धिंधिं धागे तिरकिट।	तूना कता	धागेतिरकिट धीना।	धि
	4		×

प्रश्न

1. तीनताल में कितनी मात्राएँ होती हैं ? इस ताल का पूर्ण परिचय लिखें ।
2. 12 मात्राओं के योग से किस ताल का निर्माण होता है ? उस ताल का दुगुन एवं चौगुन लिखें ।
3. 48 मात्राओं के अंतर्गत कौन-कौन सी तालें बनती हैं ? उनके नाम लिखें तथा उन सभी तालों को चौगुन को लिखें ।
4. झपताल का पूर्ण परिचय देते हुए ठाह, दुगुन एवं चौगुन की लयकारियाँ लिखें ।
5. तीनताल का ठाह, दुगुन एवं चौगुन की लयकारियों को लिखें ।

❑

भारत में शास्त्रीय नृत्य 7 प्रकार के हैं- परन्तु हाल फिलहाल में एक और शास्त्रीय नृत्य जोड़ा गया है तो कुल 8 शास्त्रीय नृत्य हो गए।

4

बिहार के लोक नृत्यों का वर्णन

बिहार लोक कला में अतिसमृद्ध है। इसकी माटी से लोक कला की सोंधी खुशबु आती हैं। "लोक" शब्द का बड़ा विराट अर्थ है, लोक संस्कृति तो लोकजीवन का आईना है। जिस प्रकार लोकशक्ति से बड़ी कोई शक्ति नहीं होती उसी प्रकार लोककला से बड़ी कोई कला नहीं होती ।

लोक नृत्य बिहार के जन जन में विशेष कर ग्रामीण क्षेत्र में पूर्ण रूप से जीवित है या यो कहें वहाँ इसका शुद्ध रूप देखने को मिलता है, शहरों में यह मिलावटी होता जा रहा है, लोक नृत्य में रस का गहरा समावेश होता है जिसे कलाकार, श्रोता और दर्शक एक ही साथ महसूस करते हैं।

बिहार के प्रत्येक क्षेत्र एवं जिले में सभी सामाजिक मौके त्योहार, शादियाँ, बच्चे के जन्मोत्सव, सोलहों संस्कार के समय यहाँ तक कि दिनचर्या में अर्थात पानी भरने के समय, जाँता चलाते समय छोटे-एवं बड़े मौकों पर लोकगीत वांछनीय है जहाँ लोक गीत होगा वहाँ स्वत: ही भाव भंगिमाएँ आरम्भ हो जाती हैं जिसे लोक नृत्य की उपाधि दी गई हैं।

बिहार को भारत का हृदय कहा जाता है। मानव शरीर में जीवन हृदय की धड़कन तक ही है जब हृदय की धड़कन समाप्त हो जाती है तो उसी क्षण यह शरीर निष्प्राण हो जाता है, ठीक इसी प्रकार बिहार की सोंधी मिट्टी से निकली नृत्य की टोलियाँ जब अपने अंचल से बाहर जाती है तो मानो संपूर्ण स्थान प्राणयुक्त हो जाता है। बिहार में लोक नृत्यों की गौरवशाली परम्परा रही है, विगत दो सौ सालों में इन पर अनेक आघात हुए परन्तु लोकनृत्यों ने अपना अस्तित्व नहीं खोया ।

लोकनृत्य जीवन की समृद्धि एवं उत्कृष्टता की सर्वाधिक सरल अभिव्यक्ति हैं। मनुष्य के अन्दर अनेक भावनाएँ जन्म लेती हैं समय एवं काल के अनुसार भावनाओं में बदलाव आता है। प्रात:काल या भोर के समय मन एवं चित्त अत्यंत प्रसन्न रहता है, चिड़ियों की चहचहाहट, तो इसी समय शरीर की भाव भंगिमाएँ आरम्भ हो जाती है, बिल्कुल बिना किसी बन्धन के उन्मुककण्ठ से अपनी मातृभाषा में कुछ बोल निकल पड़ते हैं जो गीत बन जाता है और लोकगीत कहलाता है। इन्हीं गीत के बोल पर भाव भंगिमाएँ होने लगती है जो लोकनृत्य कहलाती हैं।

इतिहास साक्षी है कि प्राचीन काल में जब मनुष्य कन्दराओं और गुफाओं में रहता था तो उसके पास भाषा नहीं थी। कुछ समय के उपरान्त वह इशारों में बाते करता था। इसके बाद धीरे-धीरे भित्तिचित्र

बनाने लगा उसकी वह लिपि थी जिसे ''पिट्रोरियल'' स्क्रीप्ट भी कहते हैं। इसी प्रकार भाव भंगिमाएँ बनती चली गई मन की उमंगे एवं तरंगे भाव बनकर शरीर का संचालन करवाने लगी। अत: कृषक एवं जनजाति समुदायों के नृत्य मानव विकास के इतिहास है।

लोक नृत्य सर्वथा किसी स्थान विशेष, जाति विशेष, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अथवा जातिगत विशिष्टताओं का प्रतीक होता है।

भारत मुख्यत: कृषि प्रधान देश रहा है । गंगा के तट पर बसा प्रदेश बिहार इसमें प्रमुख है जहाँ नृत्य एवं गीतों में खेत की सोंधी मिट्टी की खुशबु आती है।

लोक नृत्यों में कुछ नृत्य बहुत ही प्रसिद्ध है–

जैसे–(1) जट-जाटिन (2) झुमर (3) झिझिया (4) झमटा।

आगे इन नृत्यों का वर्णन है–

जट-जाटिन नृत्य :

जट-जाटिन नृत्य मुख्यत: मिथिलांचल का है यह नृत्य नाटिका के जैसा होता है। इस नृत्य में स्त्री एवं पुरुष नृत्य करते हैं एक जटिन होती है और दूसरा उसका पति जट । मुख्यत: पति-पत्नी के नोक झोक को बड़े ही रोचक तरीके से प्रस्तुत किया जाता है।

जो जट बनता है उसका पोषाक होता है धोती बदन पर गंजी (बनियाईन) और मांथे पर पगड़ी। जाटिन जो बनती है वह थोड़ी ऊँची साड़ी सिर पर पल्लू और पूर्ण जेबर पहने हुए रहती है इसमें अभिनय नृत्य के साथ इस प्रकार किया जाता है–जट-जाटिन की माताएँ विवाह की बात करती है, परन्तु जट की माता को यह विवाह पसन्द नहीं है परन्तु बाद में धन के प्रलोभन से विवाह के लिए तैयार हो जाती है विवाह हो जाता है। जटिन ससुराल विदा होती है ससुराल में जट उसे सामाजिक सुलभ व्यवहार सिखलाता है। जाटिन समझना नहीं चाहती ऐंठन दिखाती है, ये सारा दृष्टांत नृत्य के माध्यम से ही दिखलाया जाता है, और इस गीत पर जट एवं जाटिन भाव का प्रदर्शन करते हैं–

नवि के चलिगे जटिनयाँ नवि के चलिगे

जइसे नवे काँच करचिया तइसे नवि के चलिगे

जट जाटिन को नम होकर अर्थात नम्रता से चलने या रहने को सिखा रहा है। परन्तु जाटिन मानने को तैयार नहीं। होती तब अंतत: जाटिन की फरमाईश पूरी करने के लिए जट पूरब की ओर नौकरी करने चला जाता है।

जट के जाने के बाद जाटिन उसके वियोग में दुखी हो जाती है और उसे ढूंढने निकलती है वह उसे ढूंढ तो लेती है, परन्तु वह छोड़ कर चला गया था, इसी बात पर पुनः गुस्सा होकर रूठ जाती है और अब रूठने तथा मनाने का क्रम चलता है इस पर जो नृत्य होता है वह बहुत ही सुदंर होता है प्रस्तुत गीत पर यह नृत्य दर्शाया जाता है।

जाटिन–टिकवा जब जब मंगलिअऊ रे जट्वा

टिकवा किये न आनले रे

अरे बाली समइया रे जट्वा

टिकवा किये न आनले रे।

जाट– टिकवा जब-जब अनयिऊ सो जाटिन

टिकवा लिये न पेन्हले रे

अरे बाली समइया में जाटिन

नैइहर किये गमओले रे।

जाटिन ठुनक कर कहती है कि मैंने एक टीका ही तो मांगा मगर तुम वह भी नहीं दे सके मैं कैसे तुम्हारे घर में रहूँ यह बताते हो कि तुमने अपने माइके में उसे खो दिया। इसी प्रकार समस्त जेवर के बारे में ऐसी ही बाते होती है और मान मनउल होता है, अन्ततः जट-जटिन को मना लेता है और अपने घर ले जाता है। मंच पर वाद्य यंत्र में हारमोनियम, ढोलक और लोकगीत की आवश्यकता होती है।

झूमर-झूमर अधिकतर भोजपुर क्षेत्र में किसी भी उल्लास के अवसर पर करने की प्रथा है। इस समय गाये जाने वाले गीत प्रायः शृंगारिक होते हैं, जिसमे पति पत्नी के मान मनउअल नोक-झोंक होता है। कोई पत्नी अपने पति से कान का लटकन लाने के लिए मान या जिद करती है। इसके लिए वह घर का भूसा, बैल अनाज, बच्चे यहाँ तक की पति को भी बेचने को तैयार हो जाती है -

पत्नी- भुसवो बिकाय, मोहि ला देह लटकन

पति- भुसबिकि जइहे तो बैल का खइहे

पत्नी- अरे बैलो बिकाय मोहि लाय देहु लटकन

पति- बैल बिकि जइऐ तो नाज (अनाज) कैसे होई है

पत्नी- अरे नाजो बिकाय मोहि लाये देहु लटकन

प्रस्तुत गीत से यह प्रतीत होता है कि स्त्री किस तरह से विचलित है अपने गहने के लिए इस

नृत्य में स्त्रीयाँ खूब झूम-झूम कर नृत्य करती है, इसमें भी वाद्य यंत्र में ढोलक, हारमोनियम, खंजरी की आवश्यकता होती है, पोषाक चमकदार सीधा पल्ला साड़ी, आभूषण पहने रहती है सजावट पूरी रहती है क्योंकि उत्सव के अवसर पर किया जाता है।

करिया झूमर-मिथिलांचल में भी झूमर की परम्परा मिलती है। इसे करिया झूमर कहते हैं। करिया-काला और झूमर का अर्थ झूम-झूम का चक्कर में घूमना उत्तर भारत के बहुत स्थान पर झूमर होते हैं। बिहार के मिथिलांचल में भी लोकोत्सव आदि पर करिया झूमर होता है। लड़कियाँ एक दूसरे का हाथ पकड़ कर गोल-गोल घूमती हुई नृत्य करती है। यह बहुत तेज गति में होता है। नृत्य का पोषाक चमचमाता हुआ परन्तु गाढ़ा नीला या काला होता है और मुख्य रूप से यह नृत्य रात्रि वेला में होता है। इसलिए इसका नाम करिया झूमर है।

झिझिया-बिहार में झिझिया नृत्य बहुत प्रसिद्ध हैं। इस नृत्य में छिद्रदार घड़ा होता है जिसके अन्दर एक जलता हुआ दीपक रखा होता है, नृत्यांगनाएँ इतने तेजी से नृत्य करती हैं कि उस छिद्र को गिनना बहुत कठिन होता है। इसके विषय में कुछ कहानियाँ भी है जैसे एक कहानी है कि-

मुगल काल के राजा चित्रसेन और उनकी पत्नी थी, राजा उम्र में अधिक थे रानी से और शरीर से भी बेडौल, रानी राजा से बिल्कुल संतुष्ट नहीं थी तभी एक दिन राजा का भांजा बालुरूचि आता है अपने मामा के पास। बालुरूचि देखने में अत्यंत सुंदर था और कुषाग्र बुद्धि वाला नौजवान था, रानी को बालुरूची के लिए आकर्षण उत्पन्न हुआ परन्तु बालुरूचि ने स्वस्थ मन से उन्हें बहुत समझाया। न समझने पर उसने उन्हे झिड़क दिया जिस पर रानी क्रोधित हो गई और राजा के मनाने पर उन्होंने शर्त में बालुरूचि का रक्त रँजित कलेजा मांगा। राजा शोककुल हो गए परन्तु वचनवद्धता के चलते उन्होंने जल्लादों के साथ जंगल में भेज दिया, वहाँ एक जादुगरनी तंत्र सिद्धी कर रही थी उसने जादू से जल्लादों को मार दिया और बालुरूचि पर मन्त्र सिद्धि करने लगी और एक दिन बालुरूची महल में आया तब तक रानी को पश्चाताप

हो रहा था और बालुरूची को जीवित देख दोनों अत्यन्त प्रसन्न हुए परन्तु जादुगरनी भी आ गई और जबरदस्ती बालुरूची को जादु के बल से ले जाने लगी तब रानी आई और बोली मैंने भी इतने दिनों में कुछ सिद्धि की है। रानी ने एक घड़ा लिया जो छिद्रयुक्त था और उसके अंदर एक जलता हुआ दीपक रखा था। रानी ने कहा मैं घड़े को सिर पर रख कर नृत्य करूंगी यदि तुम झिझिया करते हुए मेरे घड़े के छिद्र को सही-सही गिन लोगी तो तुम जीती अन्यथा मैं, जीती और तुम्हारी शक्ति सामाप्त। जादुगरनी मान गई कहा यह कौन-सा भारी काम है, रानी नृत्य करने लगीं जादुगरनी नहीं गिन पाई और मुर्छित हो गई बालुरूची बच गया और रानी जीत गई और इस नृत्य को ही झिझिया कहा जाता है। झिझिया दशहरे के समय मन्त्र सिद्धि करने के लिए भी किया जाता है। वर्षा नहीं होने पर इन्द्र देवता के आवाहन हेतु भी किया जाता है। इसे झिझिया खेलना भी कहते हैं, रात्रि में स्त्रियाँ सिर पर छिद्रदार घड़ा लेकर झूमकर यह गीत गाकर नृत्य करती हैं-

हाली हुली बरसू इंनर देवता
पानी बिनु पड़ई अकाल हो राम।

कहीं नवरात्र में लड़कियाँ डायन एवं जादुगरनी से रक्षा हेतु इस नृत्य को करती हैं इसका गीत इस प्रकार है-

झिझिया खेलइते डयनी डरवा चलक लगे
डइनी तोहरो मंतरवा से झिझिया फूटेलगे।

एक अन्य गीत का भाव है कि झिझिया न बुझने पाए क्योंकि डयनी का नृत्य मजेदार है-

दियरा के टेम झुक-झुक बरइय गे झिझिया
डयनी के नाच मजेदार आगे झिझिया।

झिझिया में औरतें या लड़कियाँ चुनरी सीधा पल्ला साड़ी सिर पर घड़ा तथा पूर्ण जेवर में रहती है।

झमटानृत्य–यह नृत्य थारू जन जाति का अति प्रसिद्ध नृत्य है। पश्चिम चम्पारण-बेतिया में नेपाल सीमा बाल्मिकी नगर में मैना हॉड़ तक जंगल पहाड़ के बीच यह नृत्य होता है। ये लोग देखने में पूर्वोत्तर वासी जैसे होते हैं परन्तु इन लोंगो की व्युत्पति के विषय में विशेष पता नहीं चल पाया है। शरीर हृष्ट-पुष्ट होते हैं। इनकी कोई अपनी विशेष भाषा नहीं है जहाँ रहते हैं वहीं की भाषा बोलते हैं।

नृत्य स्त्री, पुरुष दोनो करते हैं साधारण साड़ी थोड़ी ऊँची कमर में लपेटा हुआ, कुछ चांदी कहीं-कहीं फूल के आभूषण, पुरुष धोती, गंजी, गमछी सिर पर बांधे गोल-ठोल घूम-घूम कर इसे करते हैं। बाजा में–मांदल हाथ में झुनझुना लेकर इसे करते हैं। गीत नेपाली और भोजपुरी का सम्मिश्रण रहता है। इसकी संस्कृति महिला प्रधान है।

प्रश्न

1. लोक नृत्य किसे कहते हैं? लोक शब्द के अर्थ से क्या समझते हैं।
2. भारत का हृदय किसे कहा जाता है? और क्यों? अपने भाषा में लिखें।
3. लोक नृत्य का प्रारम्भ कैसे हुआ, बताएँ।
4. जट- जाटिन नृत्य की विशेषता एवं इसके पोषाक एवं वेशभूषा के विषय में बताएँ। इसके गीत को लिखें।
5. झूमर नृत्य किसे कहते हैं तथा झूमर नृत्य कितने प्रकार के हैं?
6. झिझिया नृत्य की कथा अपनी समझ से लिखें तथा झिझिया किन-किन अवसरों पर किया जाता है बताएँ।
7. झूमर नृत्य कौन से जन-जाति के लोग किया करते हैं? यह नृत्य कहाँ की विशेषता है?

❑

5

पारम्परिक वेश-भूषा एवं रूप-सज्जा

कथक :

भरतमुनि ने कहा है ''समस्त नाट्य प्रयोग आहार्य अभिनय में स्थित है।'' यह नाट्य का अलंकार है। नृत्य शैली की पहली पहचान वेश-भूषा ही होती है। यदि हम नृत्य की बारीकियों से अनजान है तब भी हम सिर्फ वेश-भूषा और रूप सज्जा से नृत्य शैली को जान सकते हैं। नृत्यकला हमारे जीवन-शैली से ही प्रभावित है। कथक नटवरी नृत्य उत्तर भारत का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक राजनीतिक बदलाव के कारण इस क्षेत्र में सांस्कृतिक और सामाजिक बदलाव भी हुए जिसका असर नृत्य कला पर भी पड़ा। कभी हिन्दु राजाओं का शासन था, तो कभी मुसलमानों और कभी अंग्रेजों का शासन रहा। नृत्य का स्वरूप भी बदला और वेश-भूषा भी प्रभावित हुए।

वर्तमान समय में नृत्य शैलियाँ भी कोई पूर्व निर्धारित नहीं हैं। श्री अच्छन महाराज आदि नर्तक भी सामान्य जीवन की वेश-भूषा चूड़ीदार पायजामा और कुर्ता, अंगरखा पहनकर बिना किसी मेक अप के नृत्य किया करते थे। किन्तु अब जब नृत्यकला मंदिरों, महफिल और क्षेत्रीय दर्शकों से हटकर रंगमंच पर आया तो इसमें वेश- भूषा रूप-सज्जा का महत्व बढ़ गया और नर्तक अब इसे आकर्षक ढंग से सुसज्जित करने में जुट गए। अब नृत्य कला में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, पहचान बनाने के लिए प्रत्येक शैली को अपनी विशिष्ट वेश-भूषा विकसित करनी पड़ी। कथक नृत्य की वेश-भूषा अपेक्षाकृत अधिक वैविध्य है। इसका वर्तमान स्वरूप मुख्यत: उत्तर भारत के हिन्दू और मुस्लिम दरबारों में विकसित हुआ है अत: पुरुषों के लिए चूड़ीदार पायजामा, अंगरखा और कमर में दुपट्टा कथक नर्तकों का वेश-भूषा निर्धारित हो गया। इसी प्रकार राजस्थान की स्त्रियों और ब्रज की गोपियों द्वारा पहननेवाली वेश-भूषा लहंगा ओढ़नी कथक नृत्यांगनाओं द्वारा अपना लिया गया है। मुगलकालीन वेश-भूषा के अंतर्गत 'पेशवाज' आता है जिसमें चूड़ीदार पैजामा, लंबी घेरदार फ्रॉक, जैकेट और दुपट्टा रहता है।

भरतनाट्यम

नृत्य मुख्य रूप से दृश्य कला है। अतः यह आवश्यक है कि मंच पर उपस्थित होने वाले नर्त्तक का परिधान सुन्दर व सुरूचिपूर्ण हो, जो आँखों को देखने में भला लगे। वेश-भूषा एक वाह्य आवरण नहीं होता है बल्कि वह नृत्य के चरित्र और पृष्ठभूमि का वर्णन करता है। यदि नर्त्तक भ्रमरी के प्रकार को दर्शाता है तो उसका वेश-भूषा इसमें चार चाँद लगा देता है। भरतनाट्यम की वेश-भूषा प्राचीन काल से एक ही चली आ रही है। यह वेश-भूषा विशेष आकर्षक और कलात्मक होती है जो प्राचीन नर्त्तकियों की याद दिलाती है। पुराने समय में नर्त्तकियाँ कांजीवरम् साड़ी और दक्षिण भारतीय महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले सामान्य आभूषण धारण करके ही नृत्य किया करती थी। राज दरवारों में नृत्य करने वाली नर्त्तकियों के चित्रों में वे विशिष्ट वेश-भूषा में ही दिखाई देती हैं । किन्तु आज जो वेश-भूषा भरतनाट्यम की पहचान बन गई है, उसकी परिकल्पना श्रीमती रूक्मिणी देवी अरूण्डेल ने की थी। यह पूरी तरह सिलाई की हुई होती है। आकर्षक और गाढ़े रंग की कांजीवरम् साड़ी को चुन्नट के साथ सिलाई की जाती है। कमर से ऊपर अर्धचन्द्राकार फड़का होता है जिसमें चुन्नट लगा हुआ पंखा की तरह सिलाई की जाती है। बदन पर ब्लाउज होता है। पाँव में घुँघरू बांधे जाते हैं जो कथक नृत्य से अपेक्षाकृत कम होते हैं। भरतनाट्यम में पहने जाने वाले आभूषण को टेम्पल ज्वेलरी कहते हैं। माथे पर टीका लगाया जाता है और सिर मे दोनों ओर चन्द्राकार और सूर्य के प्रतीक दो गहने होते हैं। पीछे की ओर वेणी में मयूर आकार का आभूषण रहता है जिसे राकोड़ी कहते हैं। राकोड़ी ऊपर की ओर उठी रहती है। जिसे पीले या सफेद फूल से सजाया जाता है। नाक के दोनों ओर मक्कू पहने जाते हैं। बीच में मोती जड़ा बुलाक होता हैं, बाहों में वंगी नामक बाजूबंद तथा गले में लटकती चन्द्रहार या काशीमाला रहती हैं। इस प्रकार भरतनाट्यम

नर्त्तकी नख-शिख श्रृंगार से पूर्ण सुसज्जित होती है। कथक नृत्य में बहुत अधिक श्रृंगार की आवश्यकता नहीं होती है। वेश-भूषा पहनकर सादे ही मेक अप करके नर्तक नृत्य के लिए तैयार होते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि वर्त्तमान काल में कोई एक नियम नहीं रहा है। अतः अपनी इच्छानुसार या परम्परागत वेश-भूषा को ही कलाकार महत्व देते हैं। शास्त्रों के अनुसार नर्त्तकों की पोशाक ऐसी होनी चाहिए जिससे भाव की अभिव्यक्ति में कोई रूकावट न हो और अंगो का संचालन स्पष्ट रूप से दिखे। रंगों का चुनाव भी ऐसी होनी चाहिए जिससे नृत्यकार का सौंदर्य और खिल जाय।

अतएव नृत्य की शैली और प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से वेश-भूषा एवं वेश-सज्जा का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए।